दुनिया के बाज़ार

टेड, हिंदी: विदूषक

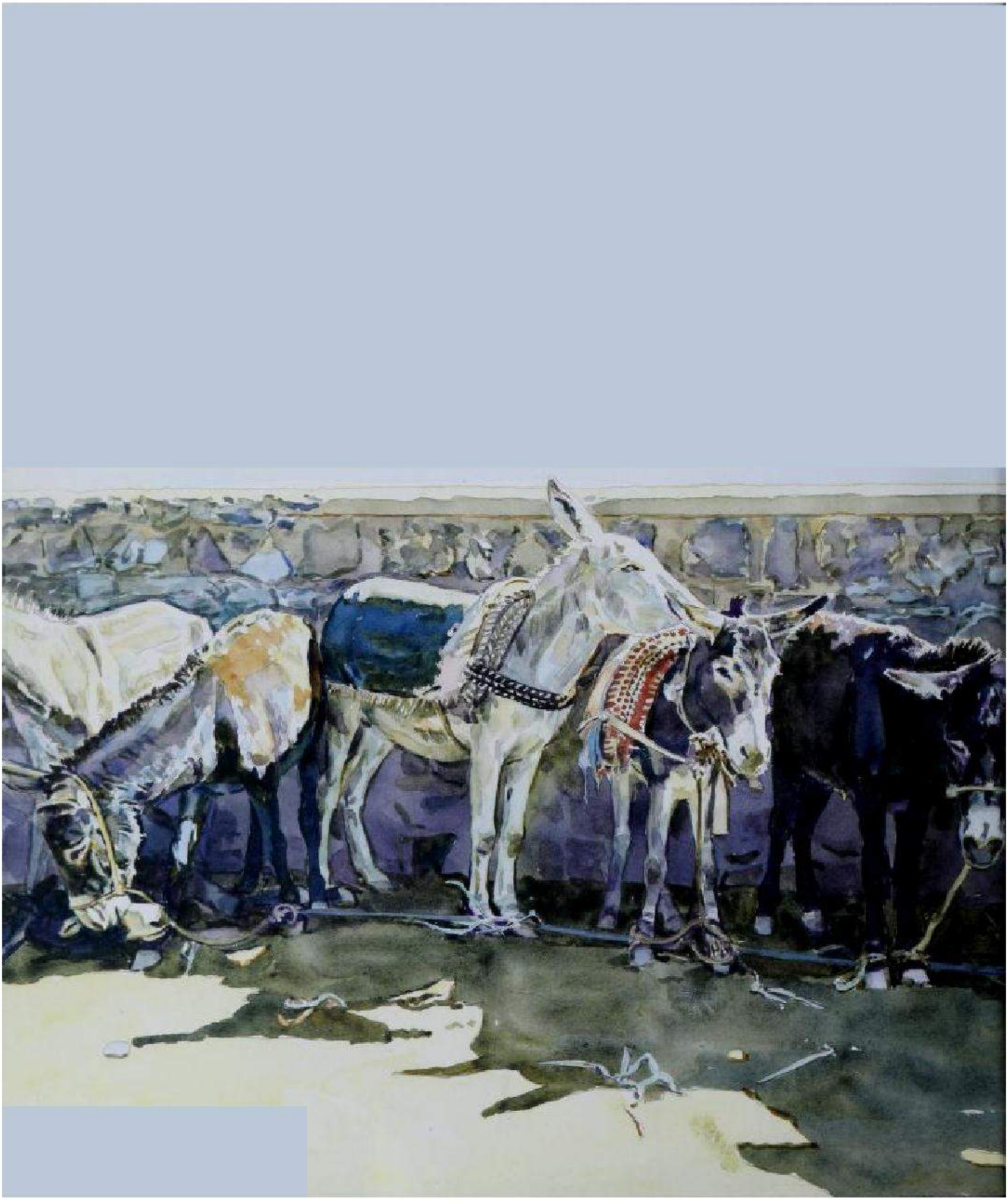

दुनिया के बाज़ार

टेड, हिंदी: विदूषक

लेखक का नोट

दक्षिण अमरीकी की ठंडी एंडीज पहाड़ियों से अफ्रीका के नम और गर्म जंगलों तक; मोरक्को के मशहूर बाज़ार "सौक्स" से लेकर न्यू-यॉर्क के वाटर-फ्रंट तक, सभी जगह लोग बाजारों में आते हैं.

बाज़ारों में बहुत से लोग पैदल आते हैं और अक्सर उनकी पीठ भारी बोझ से झुकी होती है. बाज़ार पहुंचने के लिए बहुत से लोगों को कई दिनों तक पहाड़ियों पर चलना पड़ता है. लोग जंगल की पगडंडियों पर चलकर और हाईवे का भयानक ट्रैफिक झेलकर बाज़ार पहुँचते हैं. लोग नदियों में अपनी छोटी नावों और समुद्र में बड़े जहाजों के ज़रिये बाज़ार पहुँचते हैं. लोग बाज़ार पहुँचने के नायाब तरीके ढूँढ़ते हैं.

वो बाज़ार में अपने खेत में उगाई चीज़ें, हाथ से बनाई वस्तुएं बेंचते हैं, और अन्य लोगों द्वारा उगाई और निर्मित चीज़ें खरीदते हैं.

तो चलें – दुनिया के बाजारों की सैर करें!

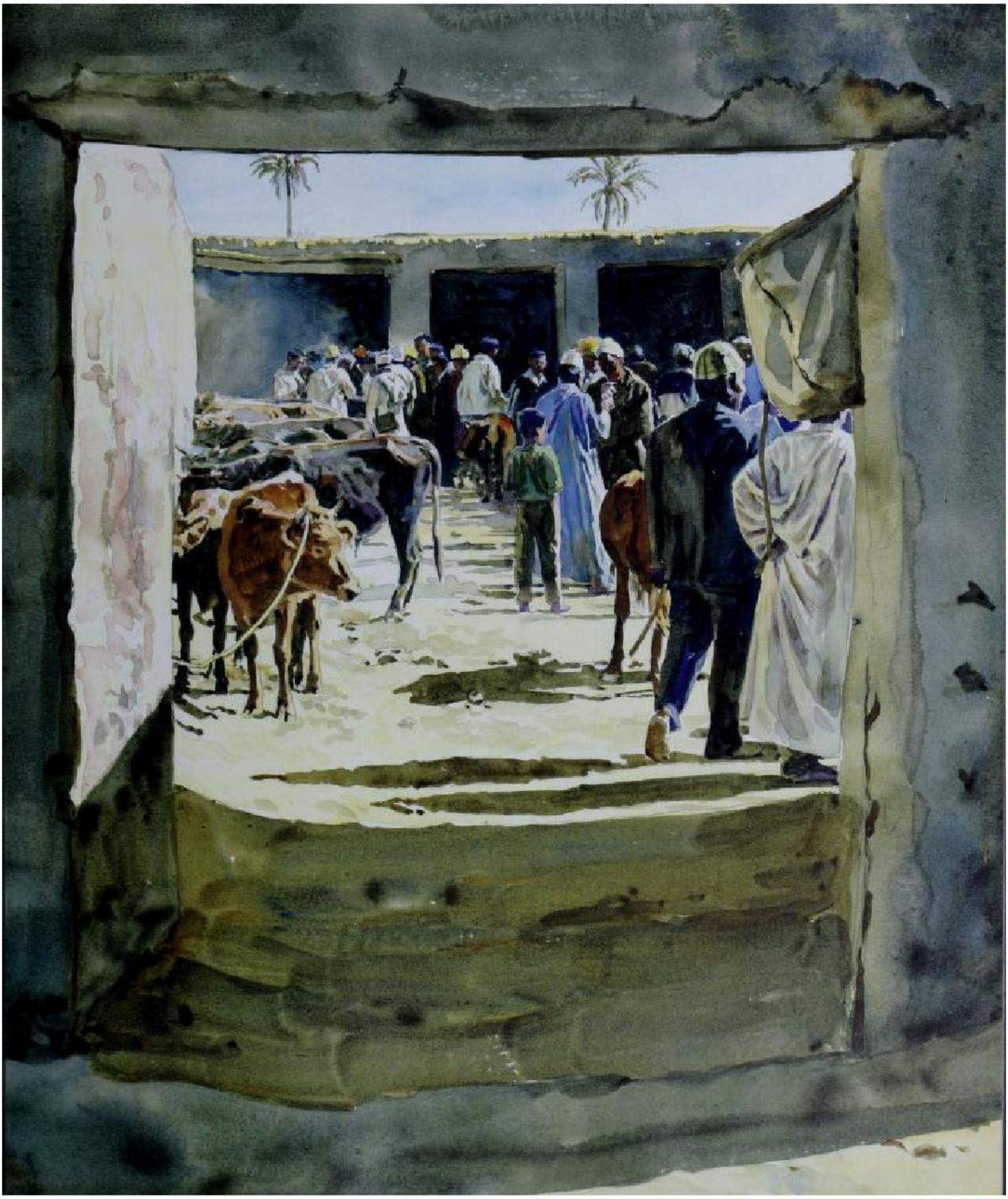

इक्वेडोर सकुइसिली, अम्बटो के पास

इक्वेडोर के लोग “इन्कास” के वंशज हैं. वो फूलों जैसे रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं. उनके नाम भी बहुत सुन्दर होते हैं – सलासकास और चिम्बोराजो. वो बाज़ार में प्याज और आलू बेंचने आते हैं जिन्हें वे सीढ़ीदार पहाड़ियों पर बादलों की छाँव में उगाते हैं.

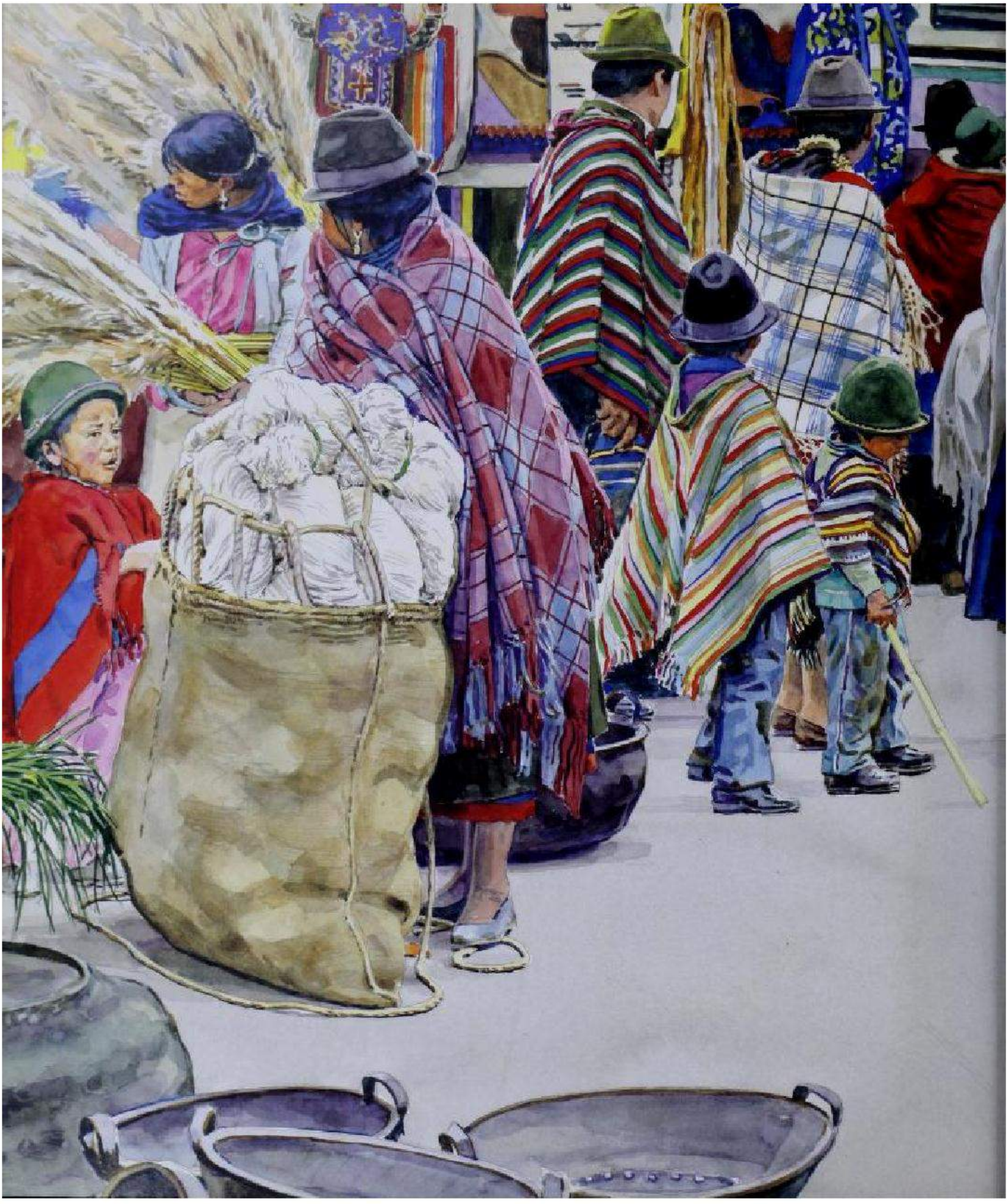

कुछ लोग कपड़े बेंचने आते हैं – स्वेटर और पौनचो जो भेड़ और लामा के ऊन के बने होते हैं. वहीं पास ही में दर्जी भी अपनी दुकानें लगाते हैं.

लोग, पुराने और घिसे रबर के टायर के बड़े घमेले और गन्ने काटने के लिए अर्ध-चाँद के आकार के हंसिये लाते हैं. वो सिसल और अन्य घासों से बुनी रस्सियाँ लाते हैं. दुकानदार, पुराने पेंट के रंग-बिरंगे डिब्बों में, रंगीन मसाले बेंचते हैं.

नेपाल

पाटन, काठमांडू के पास

यह लोग हजारों सालों से मुश्किल पहाड़ियों पर पीठ पर भारी बोझ लादे, सिर पर टोकरियाँ बाँधे, या कन्धों पर तराजू जैसे बांस को संतुलित कर, बाज़ार तक अपना माल लाये हैं. वो छप्पर का सामान, आलू, मूली, मिर्ची, लहसुन, गन्ना और अदरक लाते हैं. फिर वो दुकान सजाकर तराजू हाथ में उठाकर अपना माल बेंचने की तैयारी करते हैं.

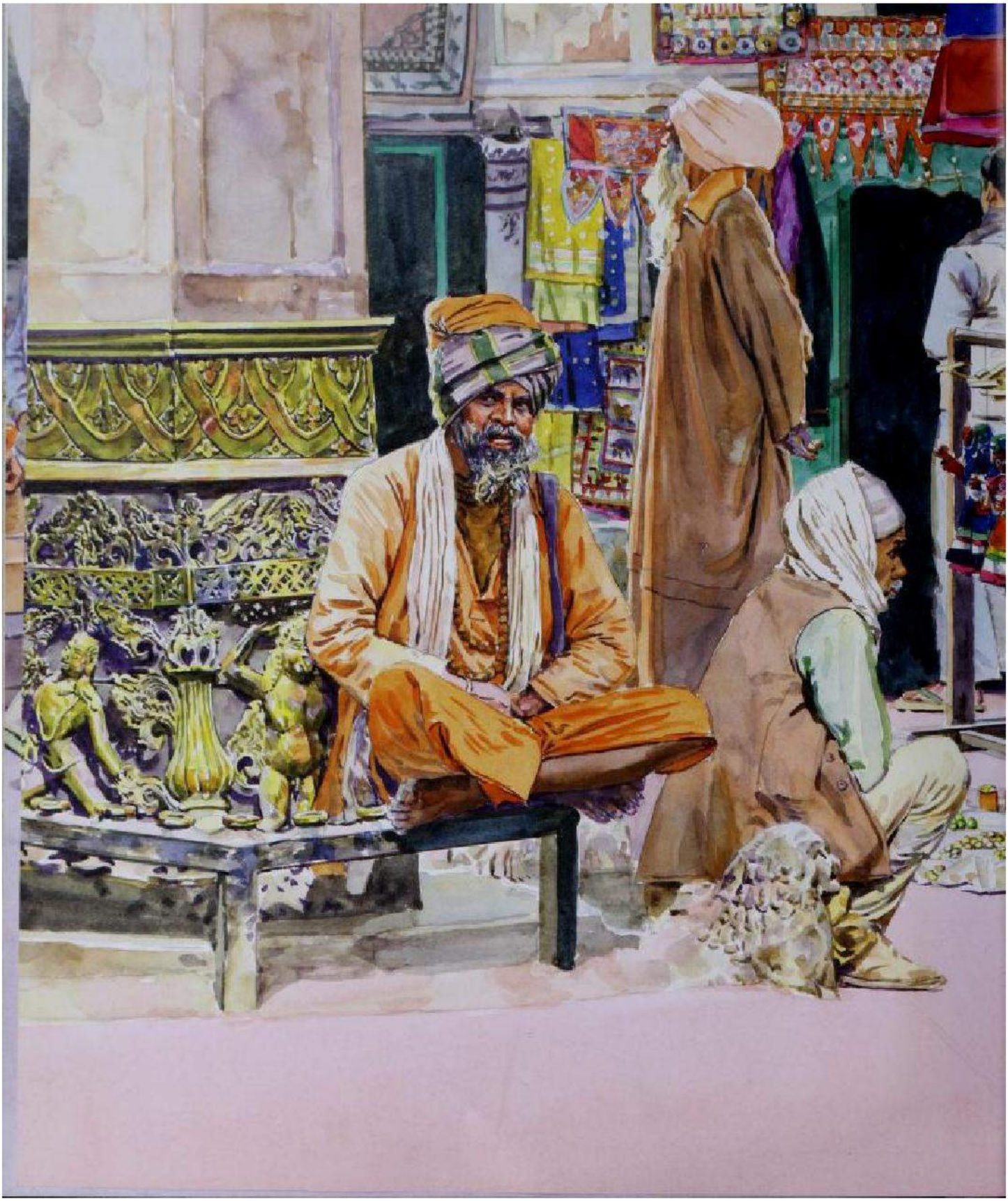

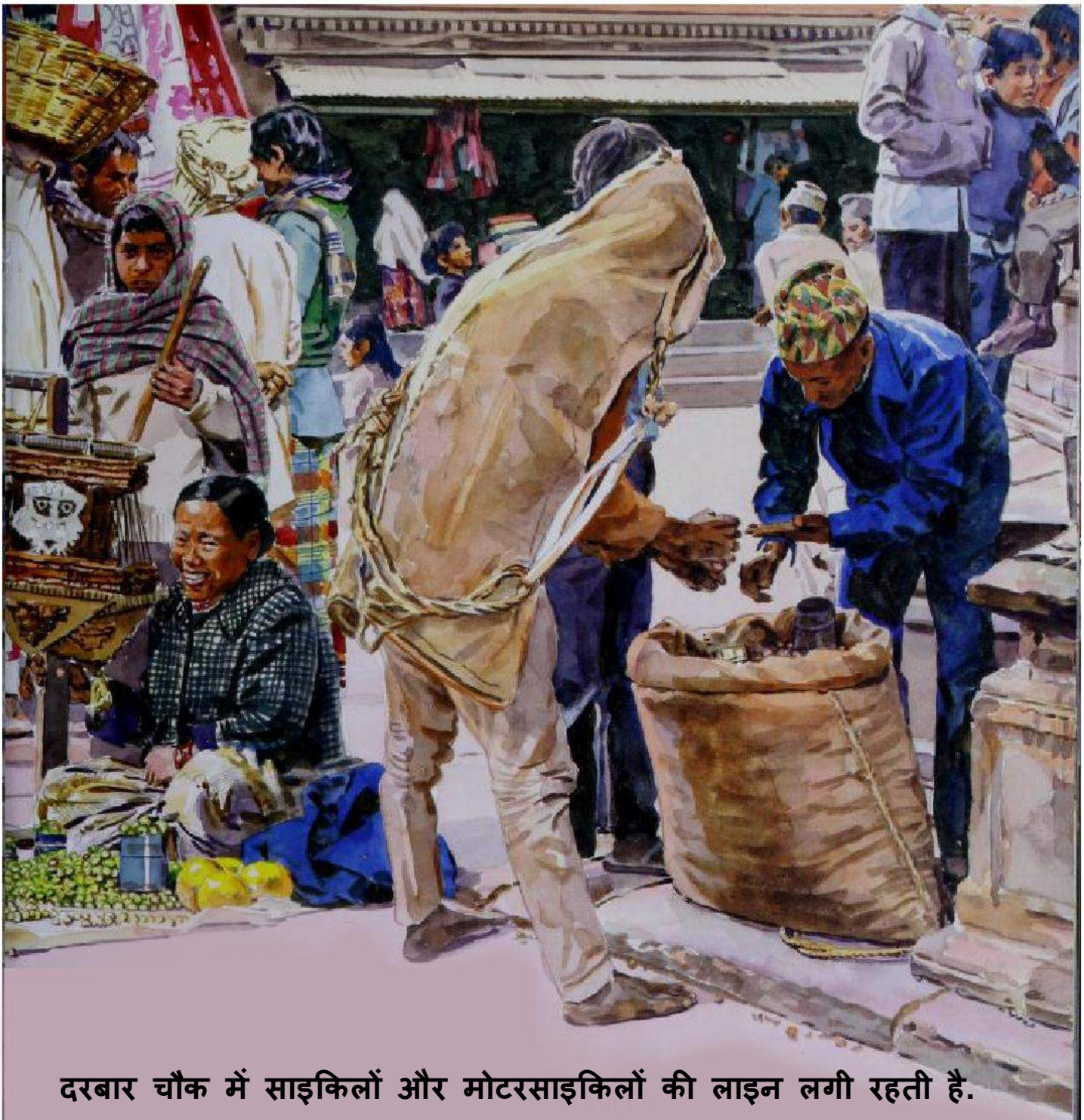

दरबार चौक में साइकिलों और मोटरसाइकिलों की लाइन लगी रहती है. वहां पर पंडे, महंत और पवित्र गाय होती हैं. वहां देवी-देवतायों की मूर्तियों पर लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं. वहां पर विक्रेता लकड़ी की मूर्तियाँ, ऊन के कालीन और ताम्बे के बर्तन बेंचते हैं.

उस चौक के पीछे बांसुरी वाले, बांसुरियां बेंचते हैं. वहां पर आसमान को छूता एक मंदिर है. उसके पीछे बर्फ से लदा एक बहुत ऊंचा पहाड़ है.

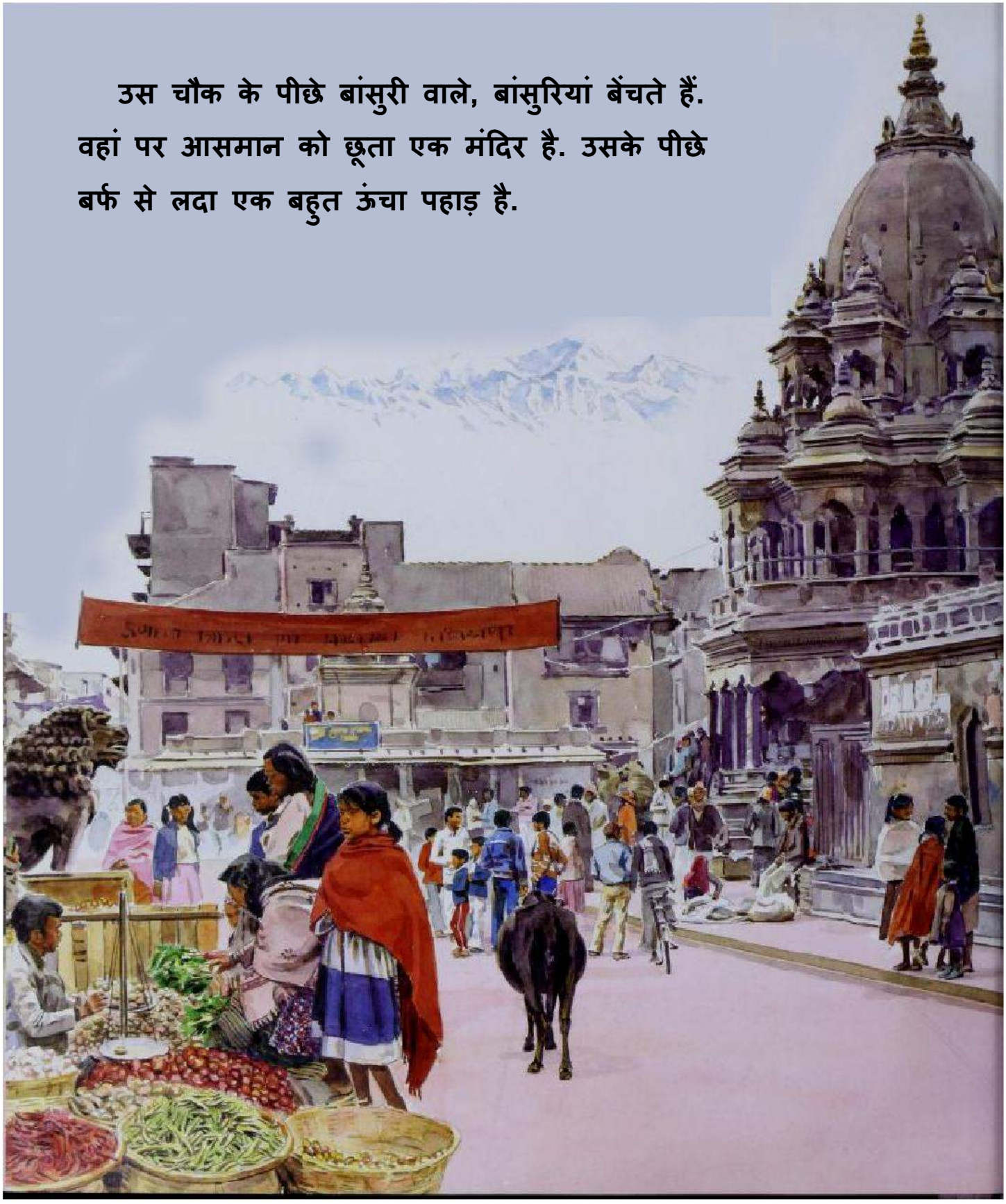

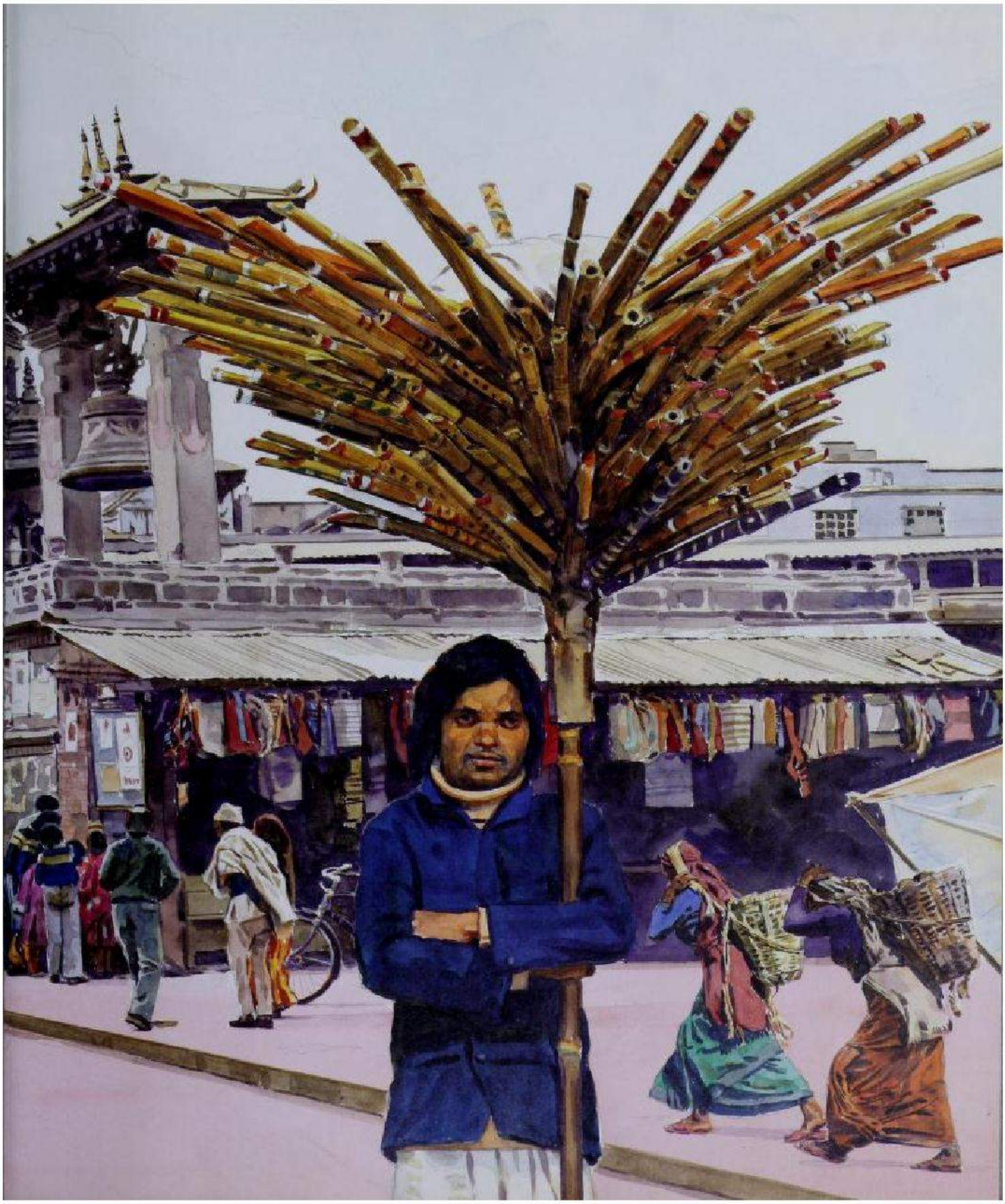

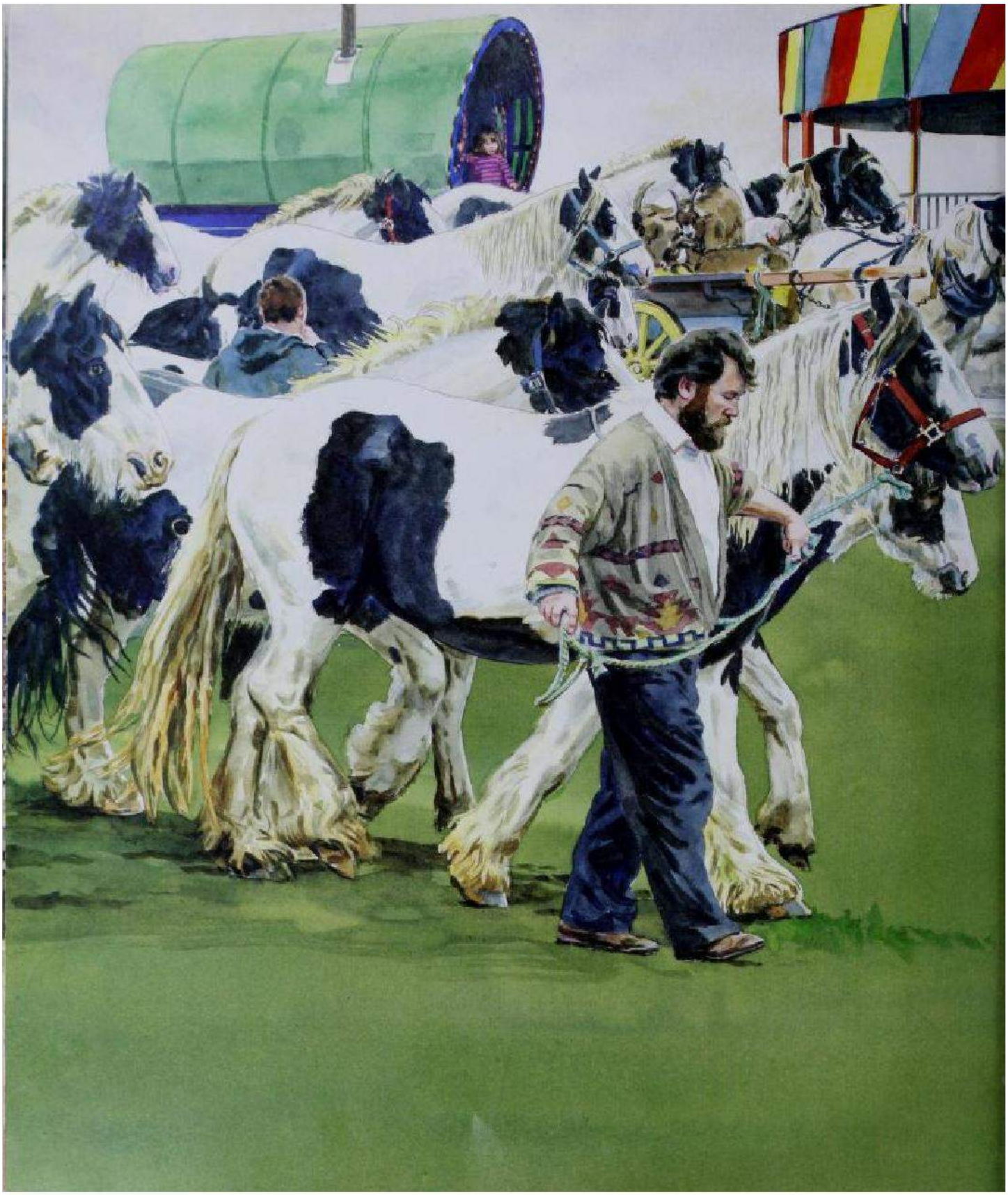

आयरलैंड

बल्लिनास्लोए, गैलवे काउंटी

यहाँ पर लोग स्याह काले आसमान और बारिश में अपनी रंग-बिरंगी गाड़ियों (वैगंस) में बाज़ार आते हैं. बाज़ार में लोग घोड़े खरीदते-बेंचते हैं और कुछ औरतें भविष्य बताने का धंधा करती हैं. यहाँ के बाजारों में जिप्सी (खानाबदोश) लोग अपने घोड़ा-गाड़ियों में आते हैं. वे रंग-बिरंगी वेश-भूषाएं पहनते हैं.

वे पहाड़ी के नीचे चर्च के पास अपना डेरा जमाते हैं और वहां पर घोड़े बेंचते हैं. ये जंगली घोड़े फटाक से दुलत्ती मारते हैं और काफी खतरनाक होते हैं.

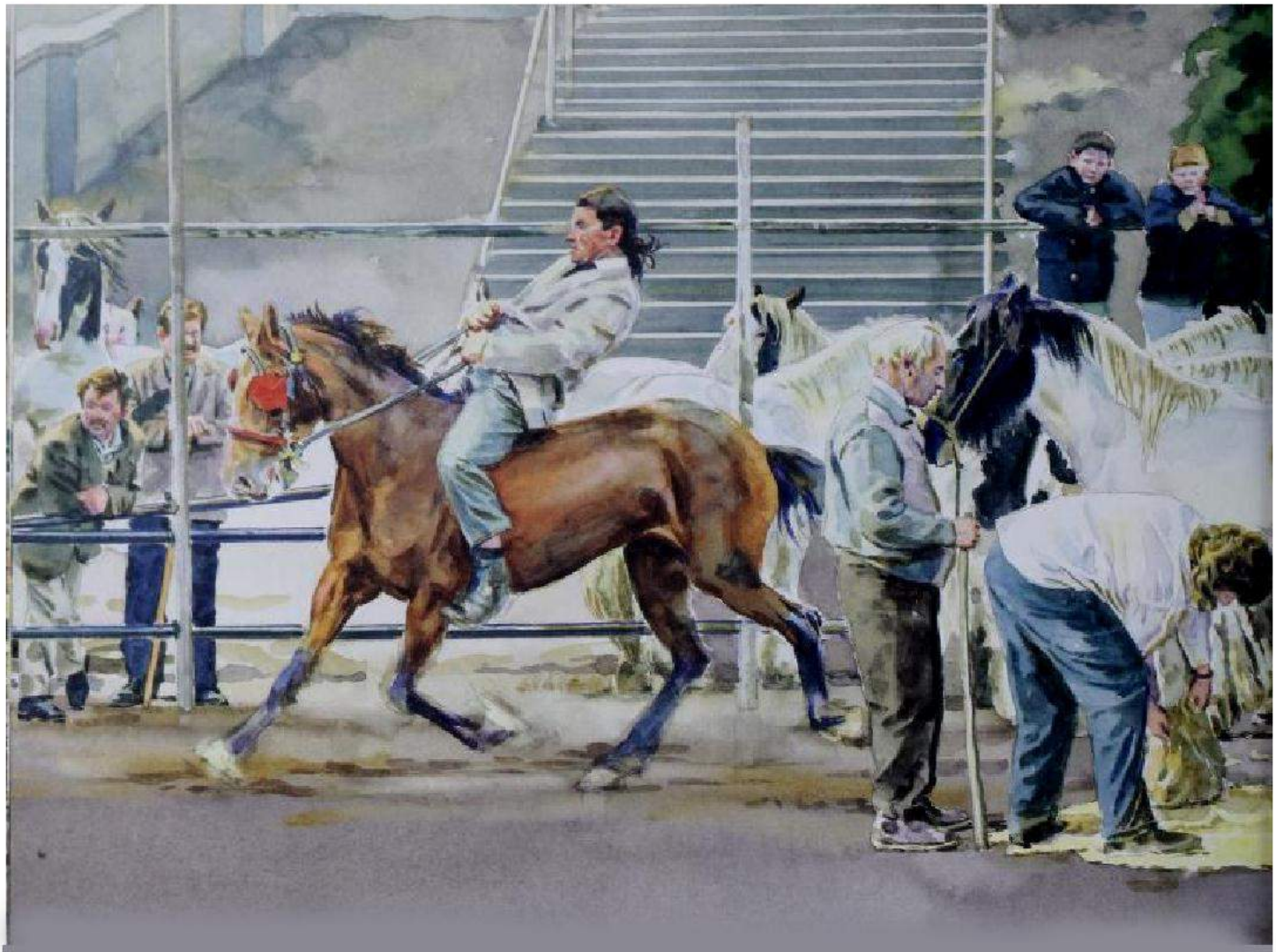

अपने घोड़ों का कमाल दिखाने के लिए मर्द पंखों पर बुरादा डालते हैं और फिर बिना कमीज़ के नंगे बदन घोड़ों पर सवारी करते हैं. वो घोड़ों पर सवार होकर लोगों के बीच से गुज़रते हैं. कुछ संगीतज्ञ इस मौके पर गाते-बजाते भी हैं.

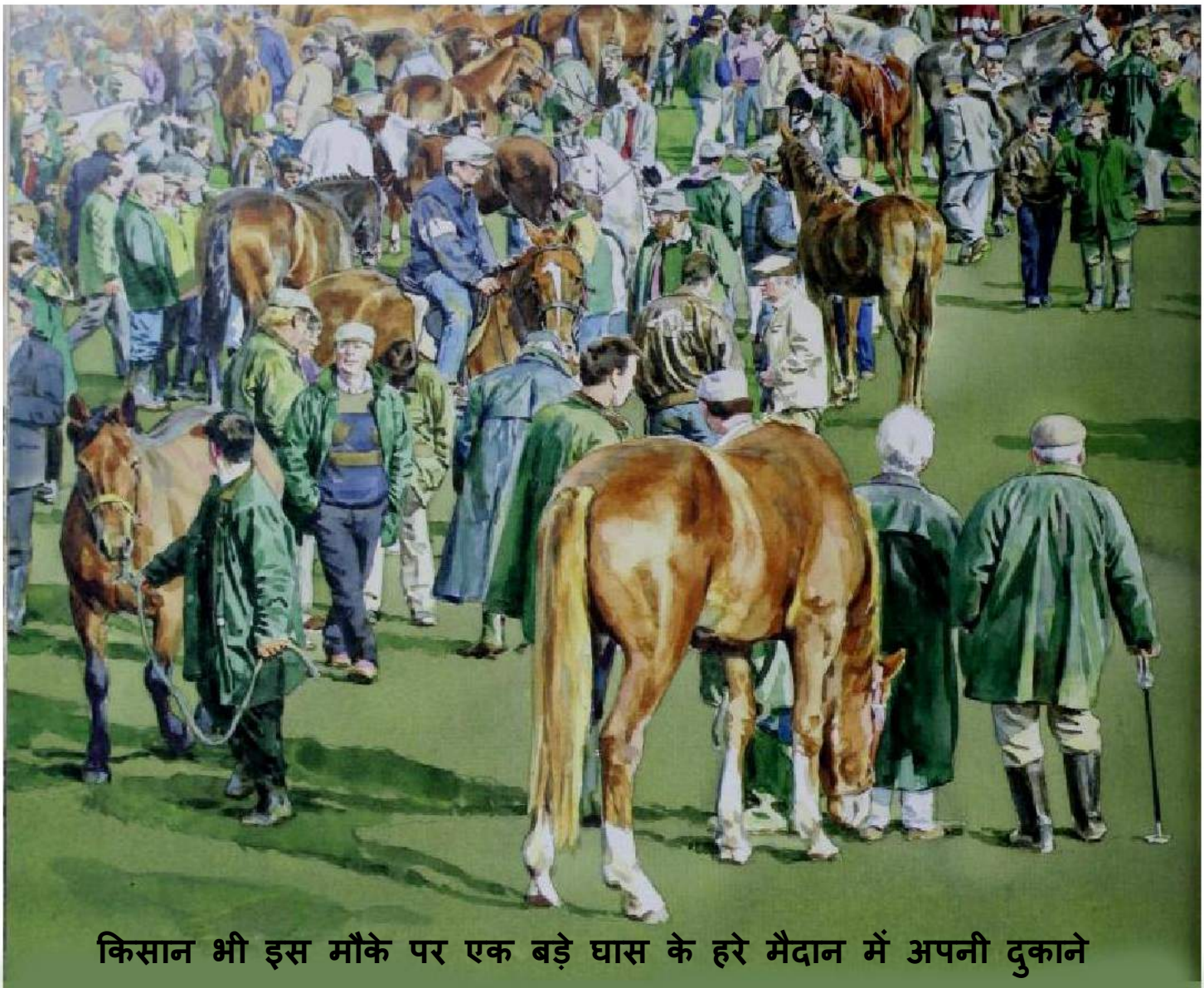

किसान भी इस मौके पर एक बड़े घास के हरे मैदान में अपनी दुकाने लगाते हैं. वे शिकारी कुत्ते, गधे, स्वेटर और शेटलैंड की मशहूर छोटी घोड़ियाँ बेंचते हैं.

घोड़ों के टापों से कुचलकर हरी घास एक दलदल में बदल जाती है. ऐसा लगता है कि जैसे दुनिया की सभी प्रजातियों के घोड़े यहाँ पर मौजूद हों. जब सूरज उगता है तो सफ़ेद और पीले रंग के घोड़ों की चमड़ी चमकती है. ऊपर की पहाड़ी से देखकर ऐसा लगता है जैसे घोड़ों की एक बड़ी फौज आक्रमण के लिए तैयार हो.

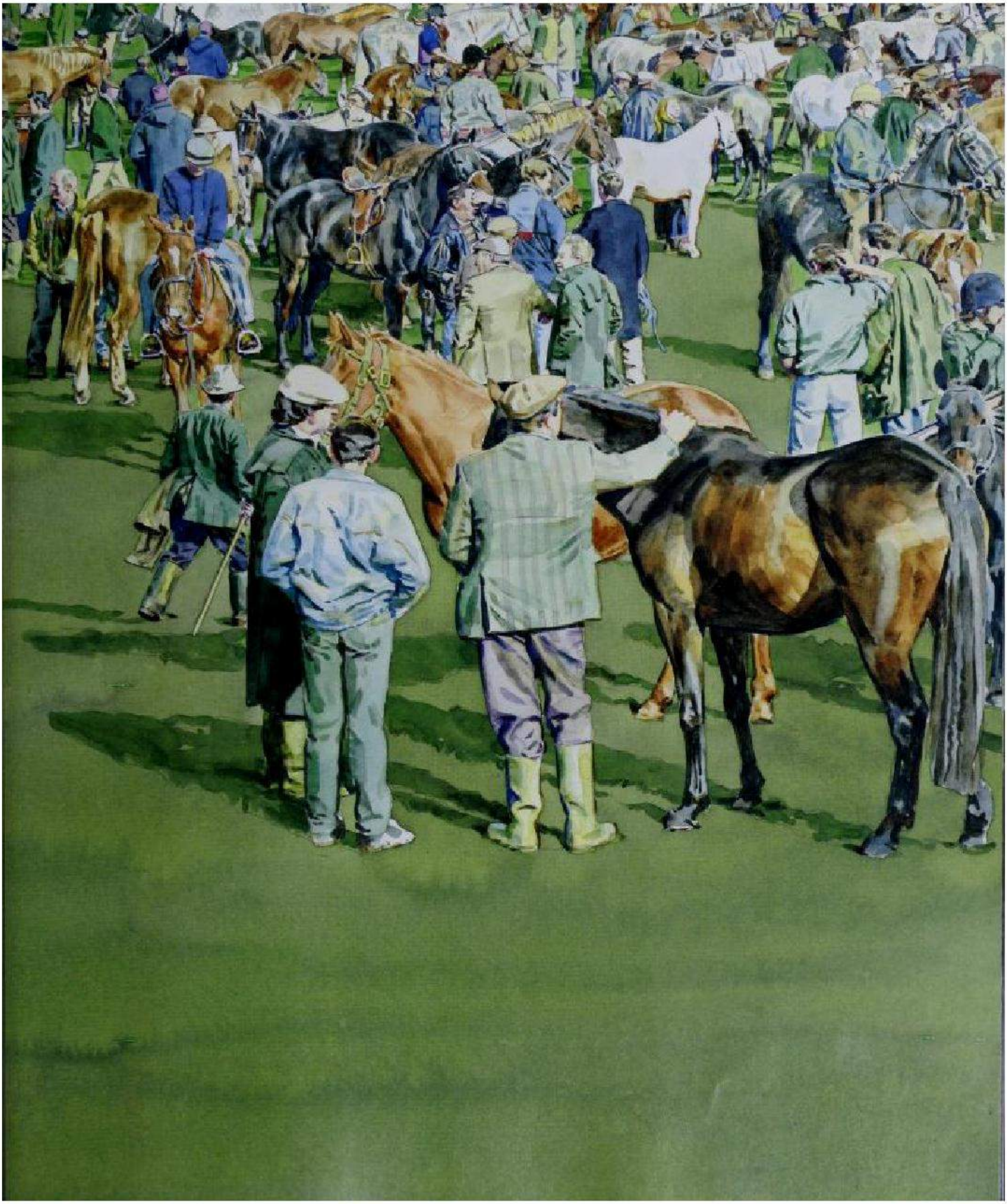

यूगांडा

कबेलेगा जल-प्रपात के पास

यहाँ पर लोग, चन्द्रमा-पहाड़ी के घने बारिश वाले जंगलों से होते हुए बाज़ार आते हैं. वे गाय का मांस बेंचते हैं.

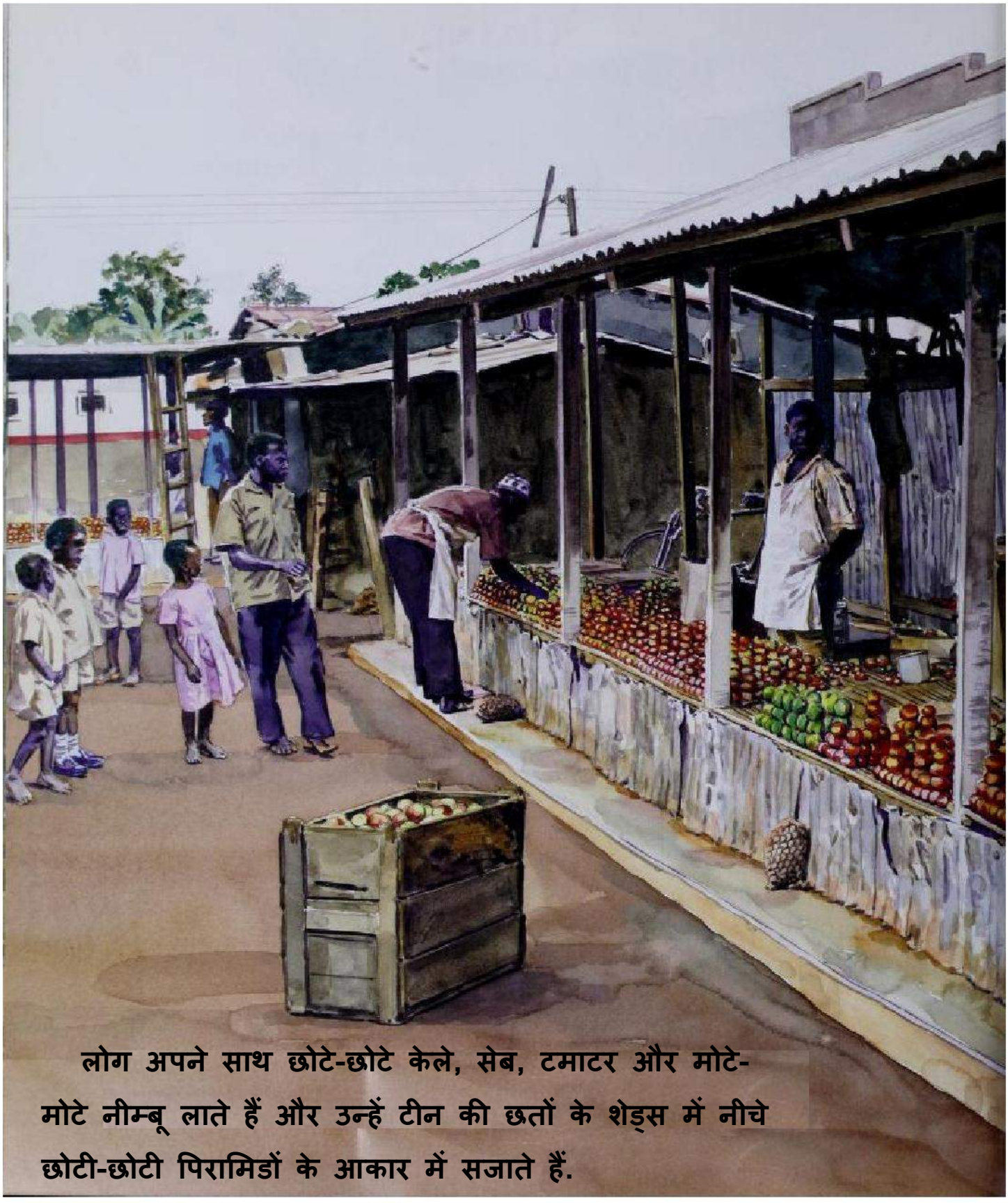

लोग अपने साथ छोटे-छोटे केले, सेब, टमाटर और मोटे-मोटे नीम्बू लाते हैं और उन्हें टीन की छतों के शेड्स में नीचे छोटी-छोटी पिरामिडों के आकार में सजाते हैं.

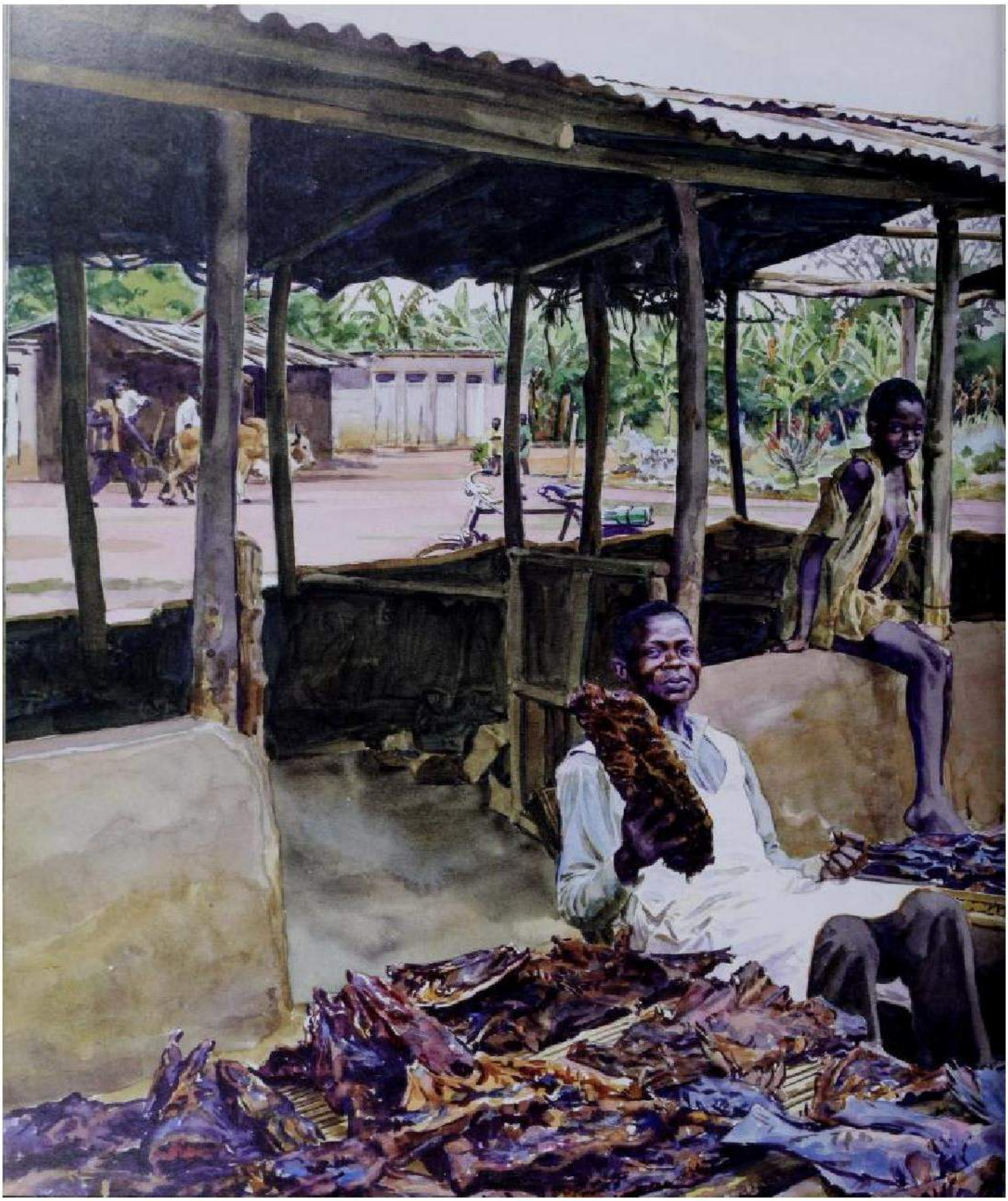

लोग अपने साथ सूखी मछली लाते हैं. यह मछलियाँ वे कबेलेगा जल-प्रपात में पकड़ते हैं. यह जल-प्रपात ही सफ़ेद नील-नदी का उद्‌गम है. शाम को क्या बचता है – खाली शेड और गाय के खून के धब्बों से सने काउंटर.

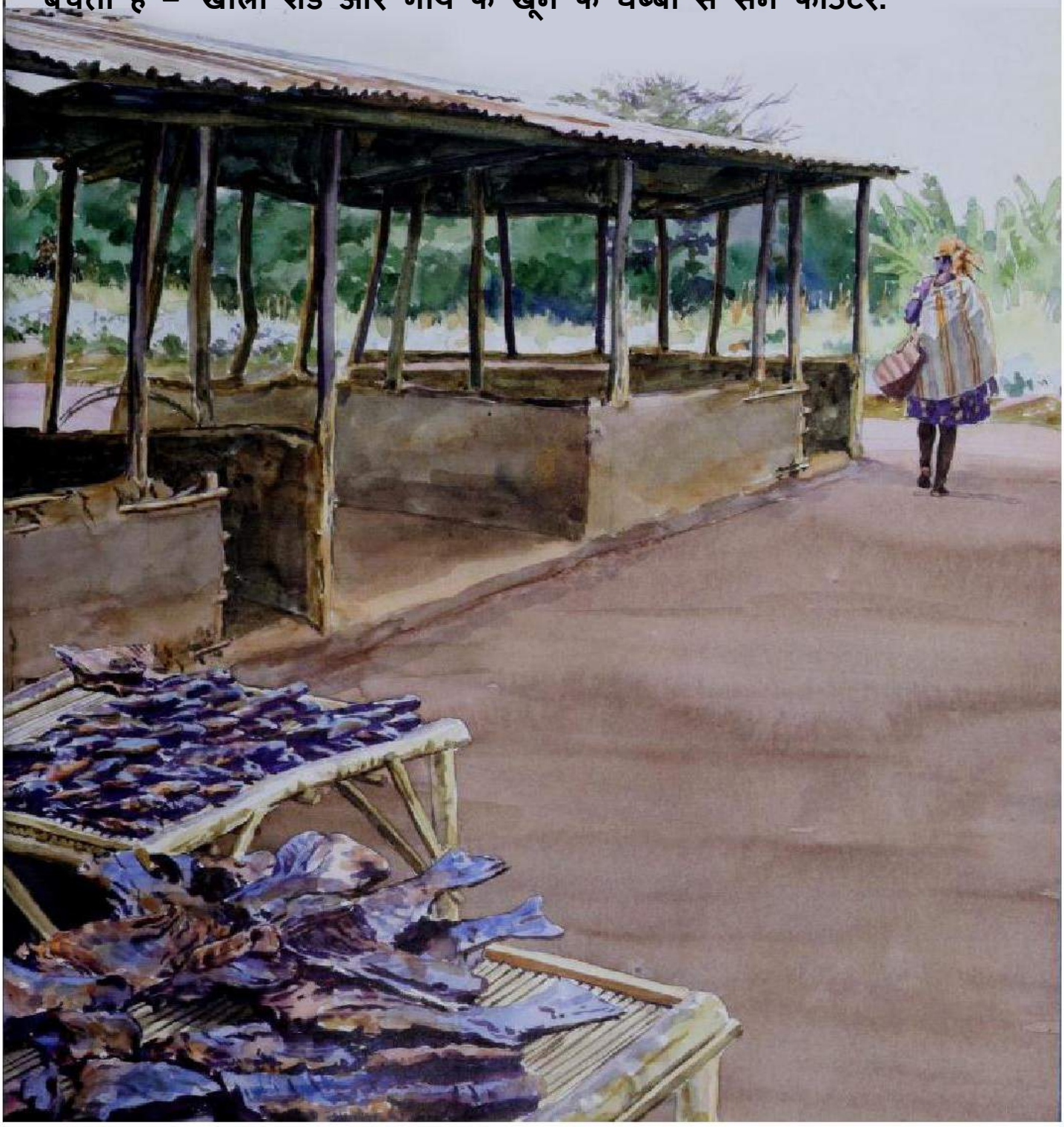

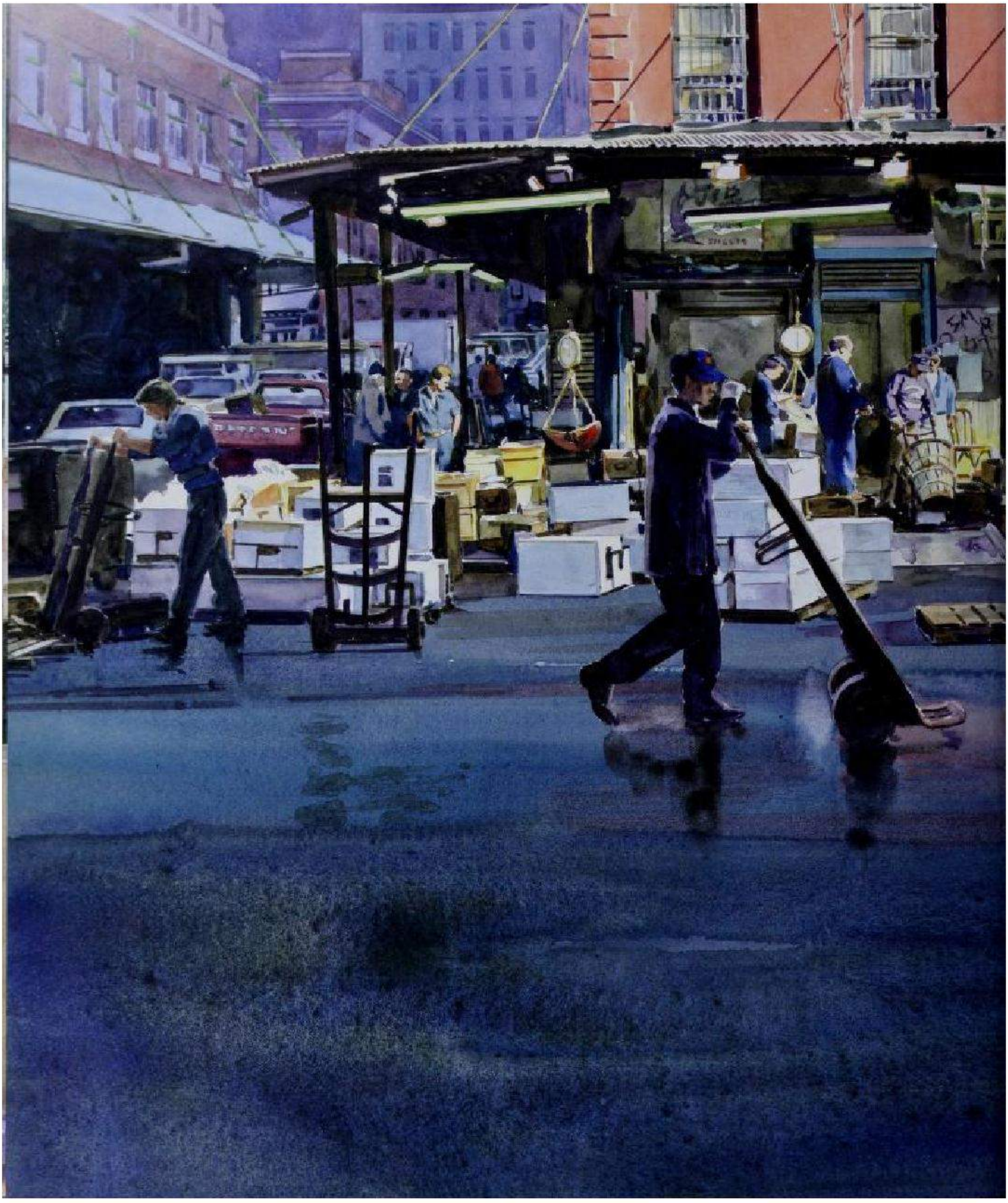

अमरीका

फुल्टन फ़्रूट मार्किट, न्यू यॉर्क सिटी

वहां लोग उस समय आते हैं जब बाकी लोग सो रहे होते हैं. यहाँ पर लहीम-शहीम मर्द रबर के ऊंचे जूते पहनते हैं. उनके कन्धों से हुक लटके होते हैं और वे टयूब-लाइट की कत्रिम रोशनी में एक-दूसरे से बहस करते हैं. "क्या कीमत? बहुत ज्यादा? किसे उल्लू बना रहे हो?" फिर सुबह होते ही सूरज की पहली किरणें उन पुराने शेड्स को रोशन करती हैं.

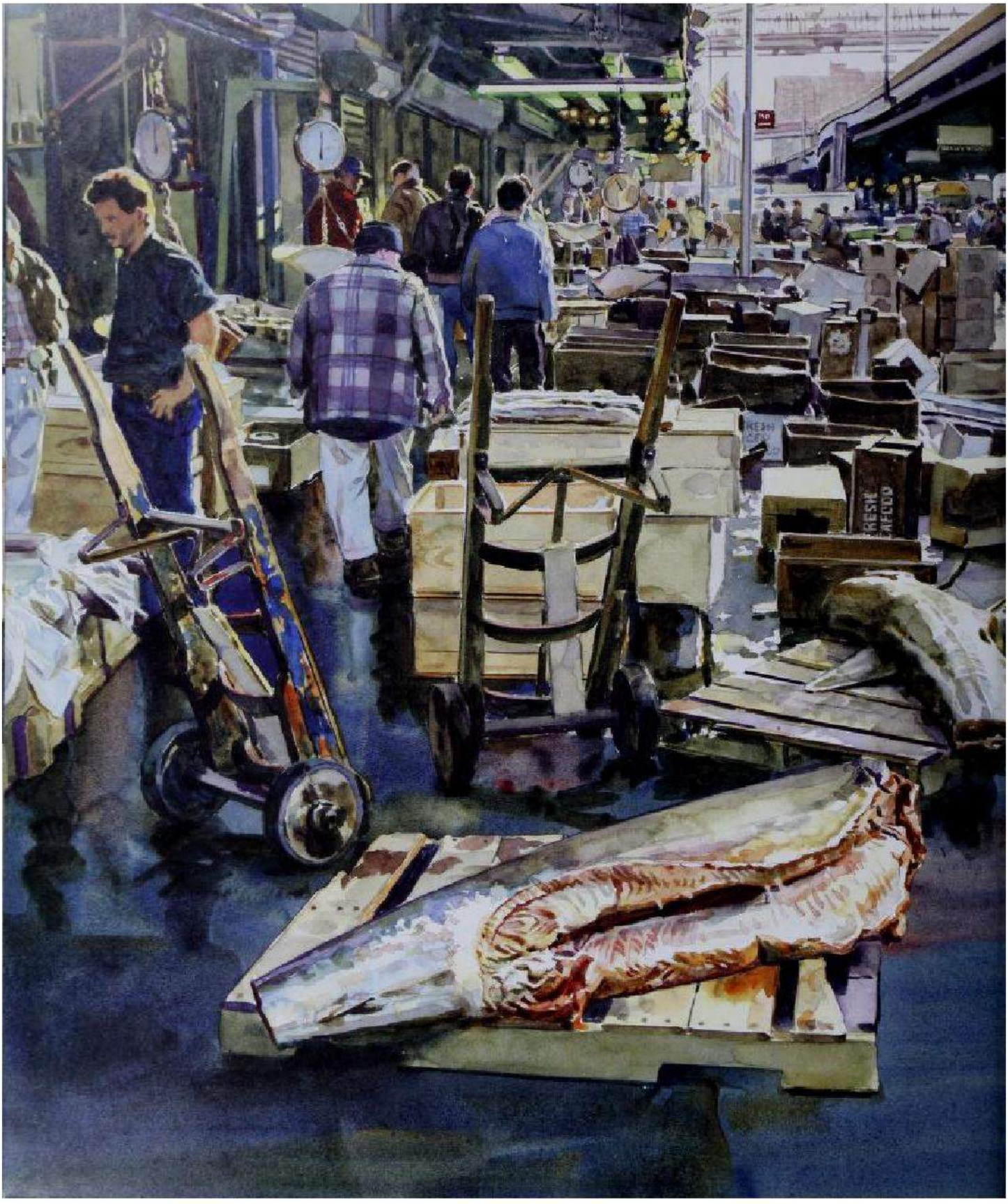

मछली बाज़ार में एक तरफ 10 फीट लम्बी शार्क पडी है. सभी तरफ मछलियों से भरे डिब्बे फैले हैं जैसे वो दीवार बनाने के सीमेंट के ब्लॉक्स हों.

INC.
FOOD

अन्दर छोटी और पलटी नावों जैसे बड़ी ट्यूना मछलियाँ और माको शार्क पड़ी हैं. कुशल कारीगर किसी सर्जन जैसे उनका पेट चीरते हैं. वहां तरह-तरह की मछलियाँ हैं – स्टर्जन, रेड स्नाप्पेर्स, ग्रीन-डॉलफिन, शैल-फिश, क्रे-फिश और कार्प. बाज़ार में ट्रकों का ताँता लगा है. ट्रकों में भर-भर कर यह मछलियाँ शहर और पूरे देश में भेजी जाती हैं.

मोरक्को, रिस्सानी, एरफौद के पास

लोग रिस्सानी के इस ऐतिहासिक बाज़ार में आते हैं. 1200 साल पहले अरब का शहर सिजिल्मास्सा बहुत समृद्ध बना. क्यों? इस शहर में पूरी अफ्रीका से एम्बर, सोना, नमक और गुलाम बिकने के लिए आते थे.

इस बाज़ार में लोग अपने-अपने छोटे शहरों से आते हैं जहाँ वे मिट्टी के बने जूतों के डिब्बों जैसे घरों में रहते हैं.

लोग गधों पर माल लादकर लाते हैं. उनकी बड़ी-बड़ी टोकरियाँ फलों, सब्जियों, अनाज और खजूर से लबालब भारी होती हैं. लोग रिस्सानी के बड़े दरवाज़े से अन्दर आकर फिर माल से लदे अपने गधों के साथ धूल भरी, सकरी गलियों में से गुज़रते हुए "रास्ता छोड़ो! रास्ता छोड़ो!" चिल्लाते हुए बाज़ार आते हैं. रास्ते से हटो, नहीं तो टक्कर खाओ! फिर दो दिरहाम किराया देकर वो अपने गधे को एक रखवाले के पास छोड़ते हैं. दिन ढलने के बाद बड़ी मुश्किल से धूल और भीड़ की चिल्लाहट में वे अपने गधे को वापिस खोजते हैं.

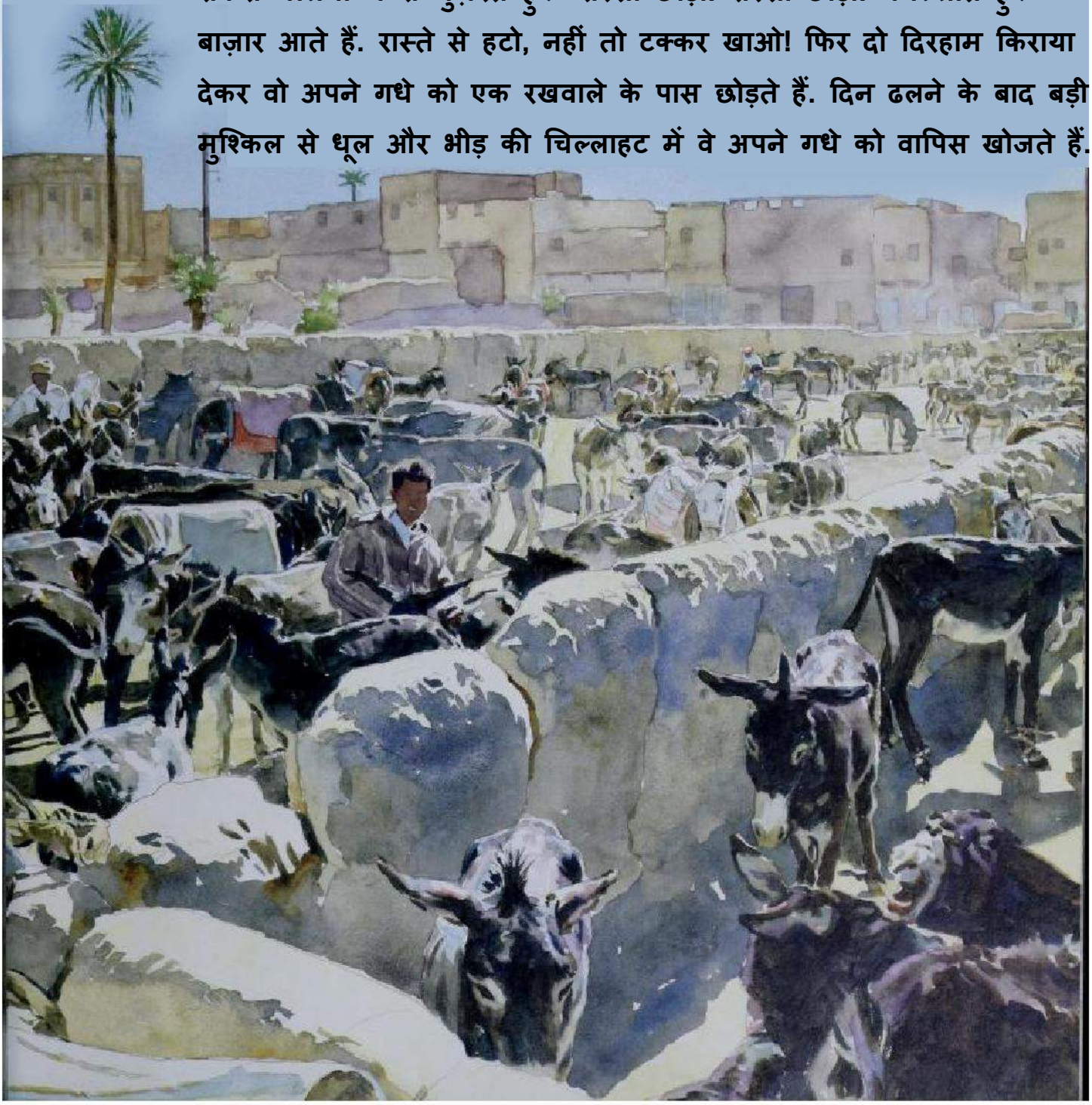

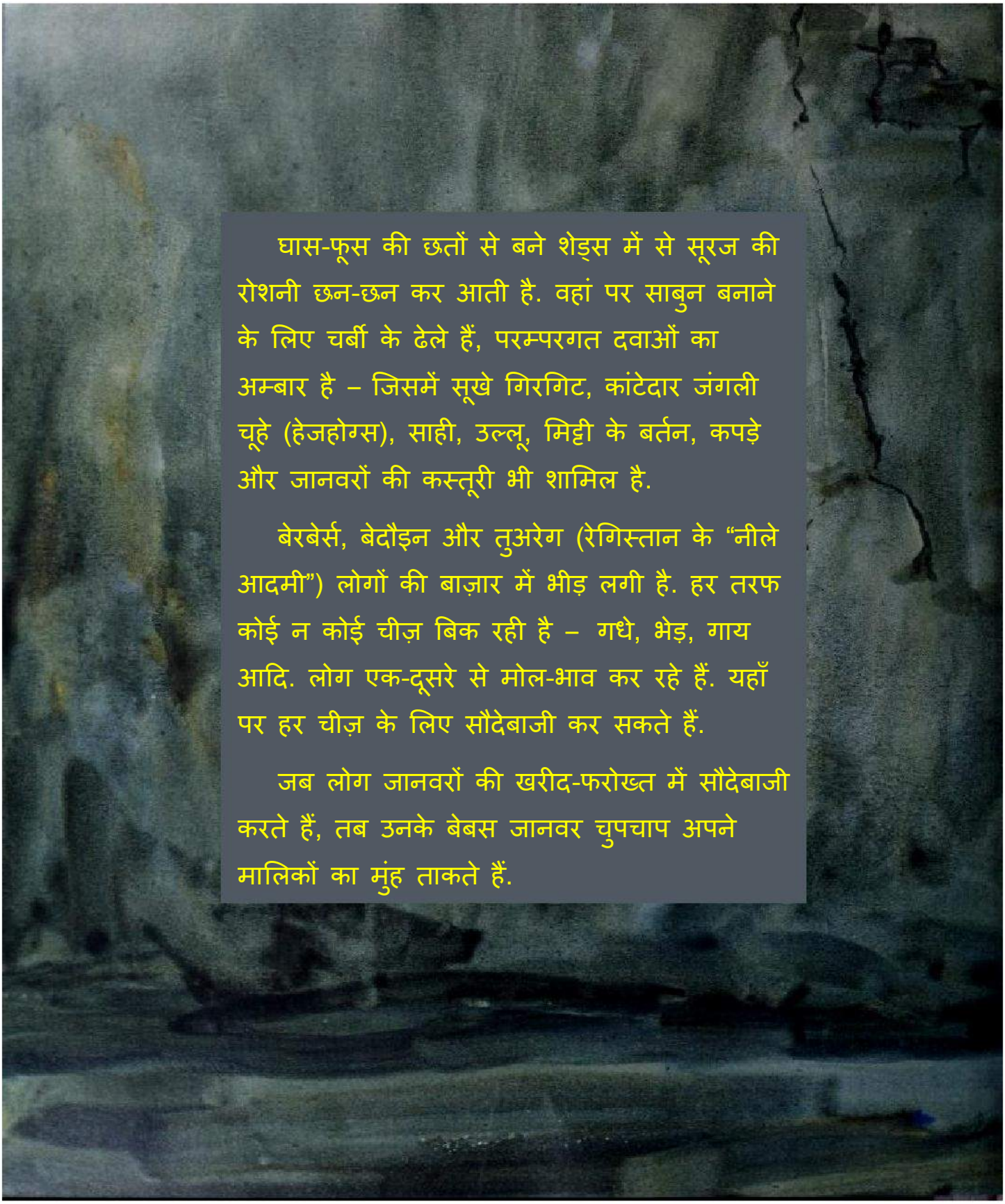

घास-फूस की छतों से बने शेड्स में से सूरज की रोशनी छन-छन कर आती है. वहां पर साबुन बनाने के लिए चर्बी के ढेले हैं, परम्परगत दवाओं का अम्बार है – जिसमें सूखे गिरगिट, कांटेदार जंगली चूहे (हेजहोग्स), साही, उल्लू, मिट्टी के बर्तन, कपड़े और जानवरों की कस्तूरी भी शामिल है.

बेरबेर्स, बेदौइन और तुअरेग (रेगिस्तान के "नीले आदमी") लोगों की बाज़ार में भीड़ लगी है. हर तरफ कोई न कोई चीज़ बिक रही है – गधे, भेड़, गाय आदि. लोग एक-दूसरे से मोल-भाव कर रहे हैं. यहाँ पर हर चीज़ के लिए सौदेबाजी कर सकते हैं.

जब लोग जानवरों की खरीद-फरोख्त में सौदेबाजी करते हैं, तब उनके बेबस जानवर चुपचाप अपने मालिकों का मुंह ताकते हैं.

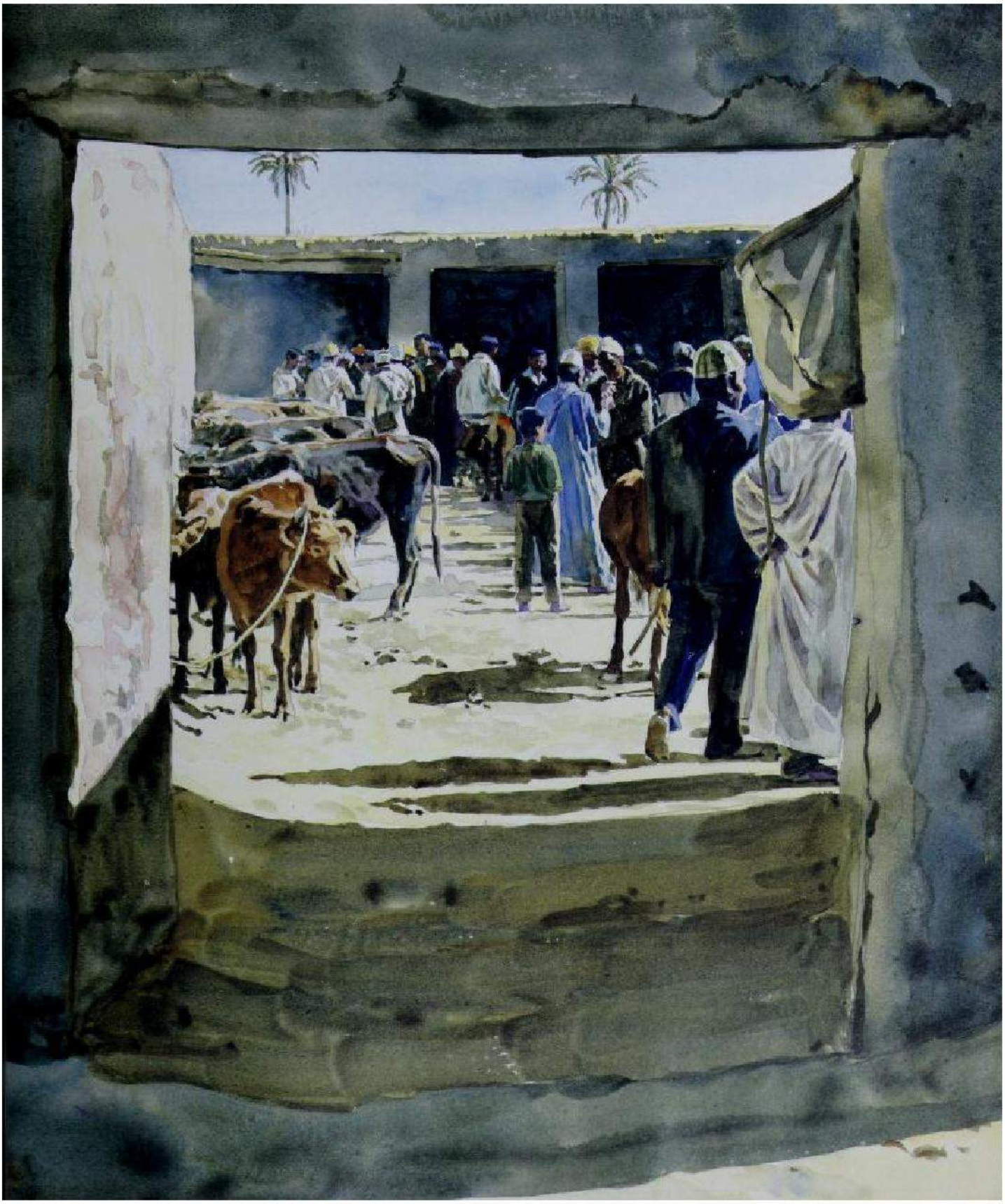

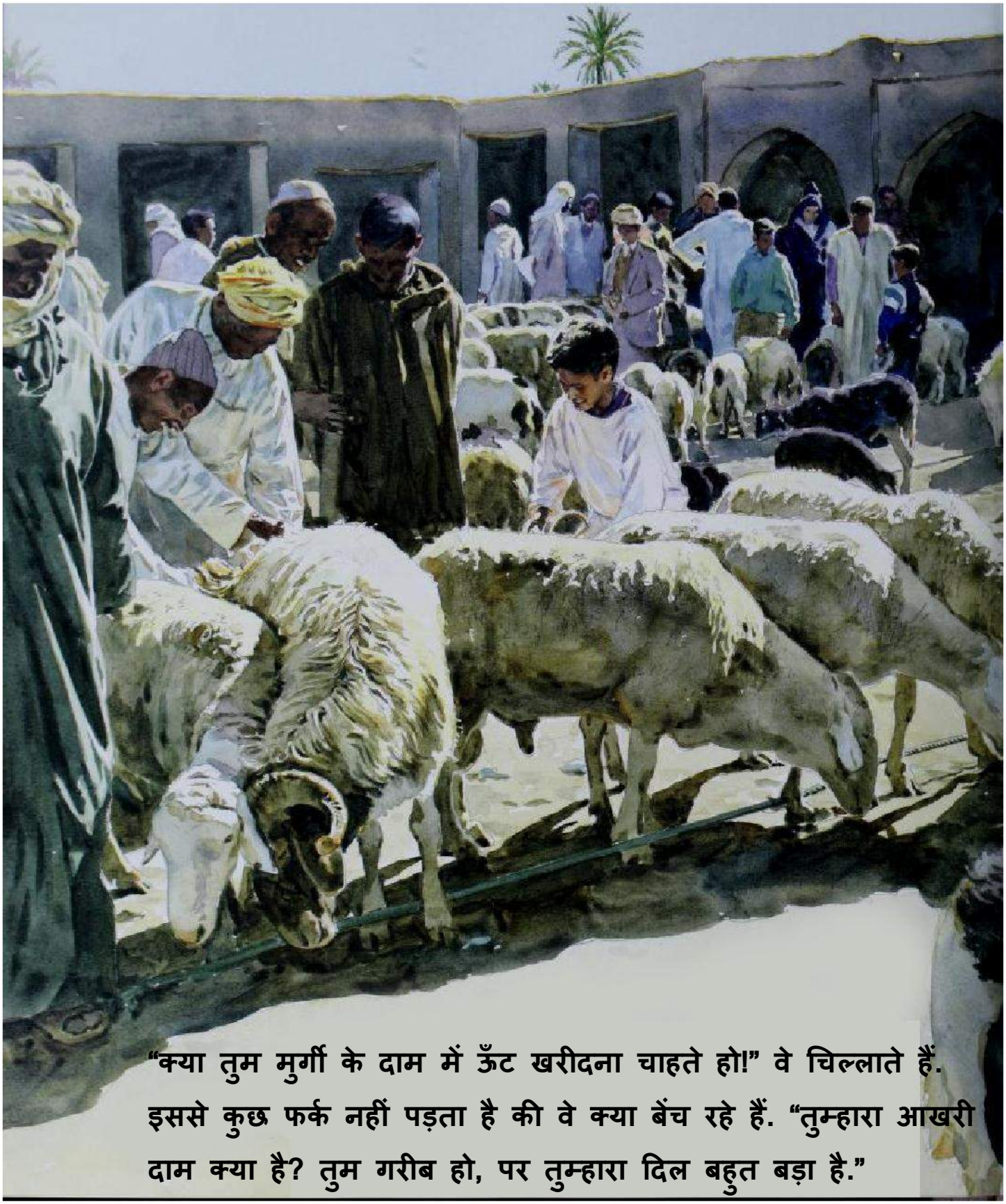

“क्या तुम मुर्गी के दाम में ऊँट खरीदना चाहते हो!” वे चिल्लाते हैं. इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता है की वे क्या बेंच रहे हैं. “तुम्हारा आखरी दाम क्या है? तुम गरीब हो, पर तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है.”

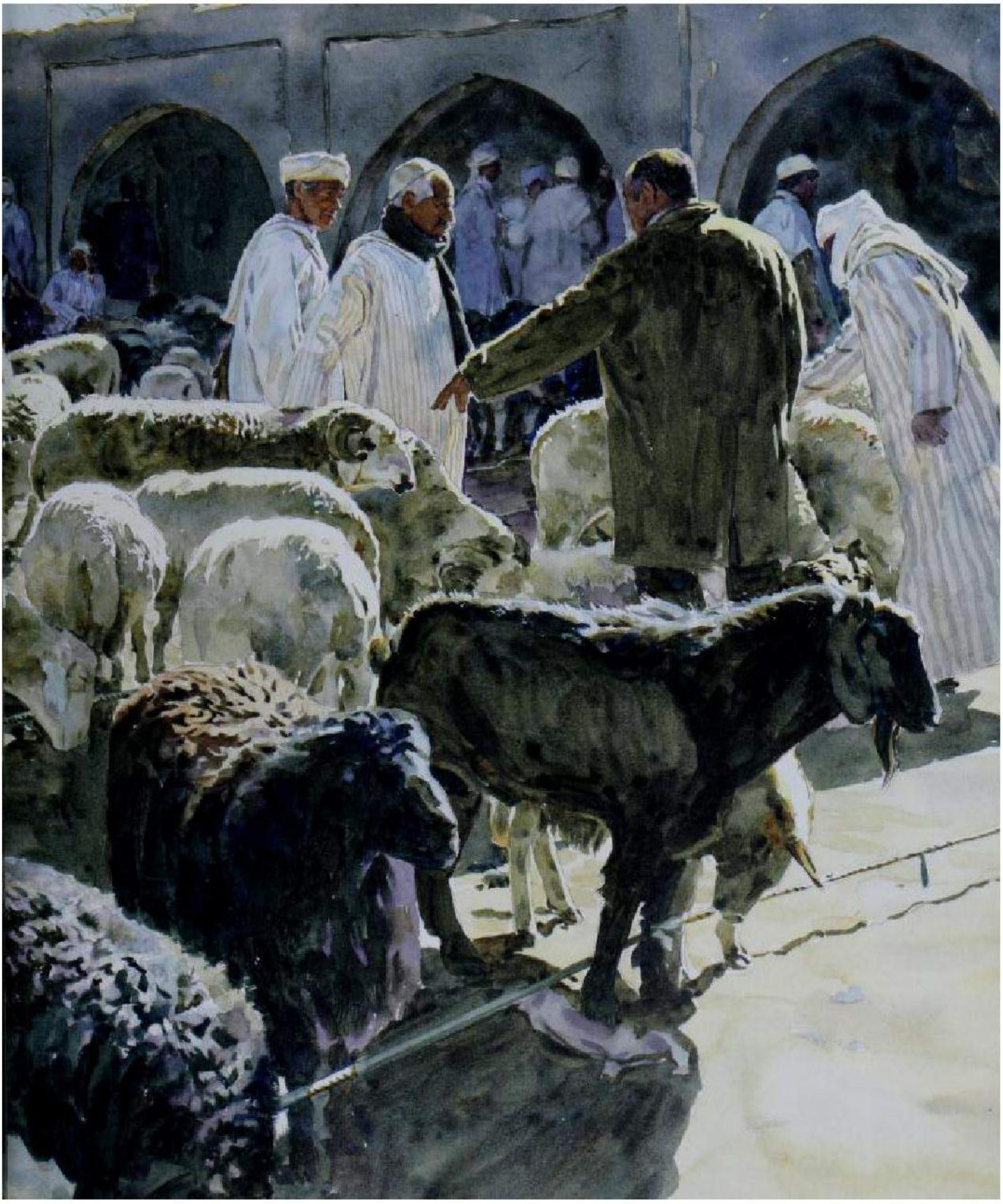

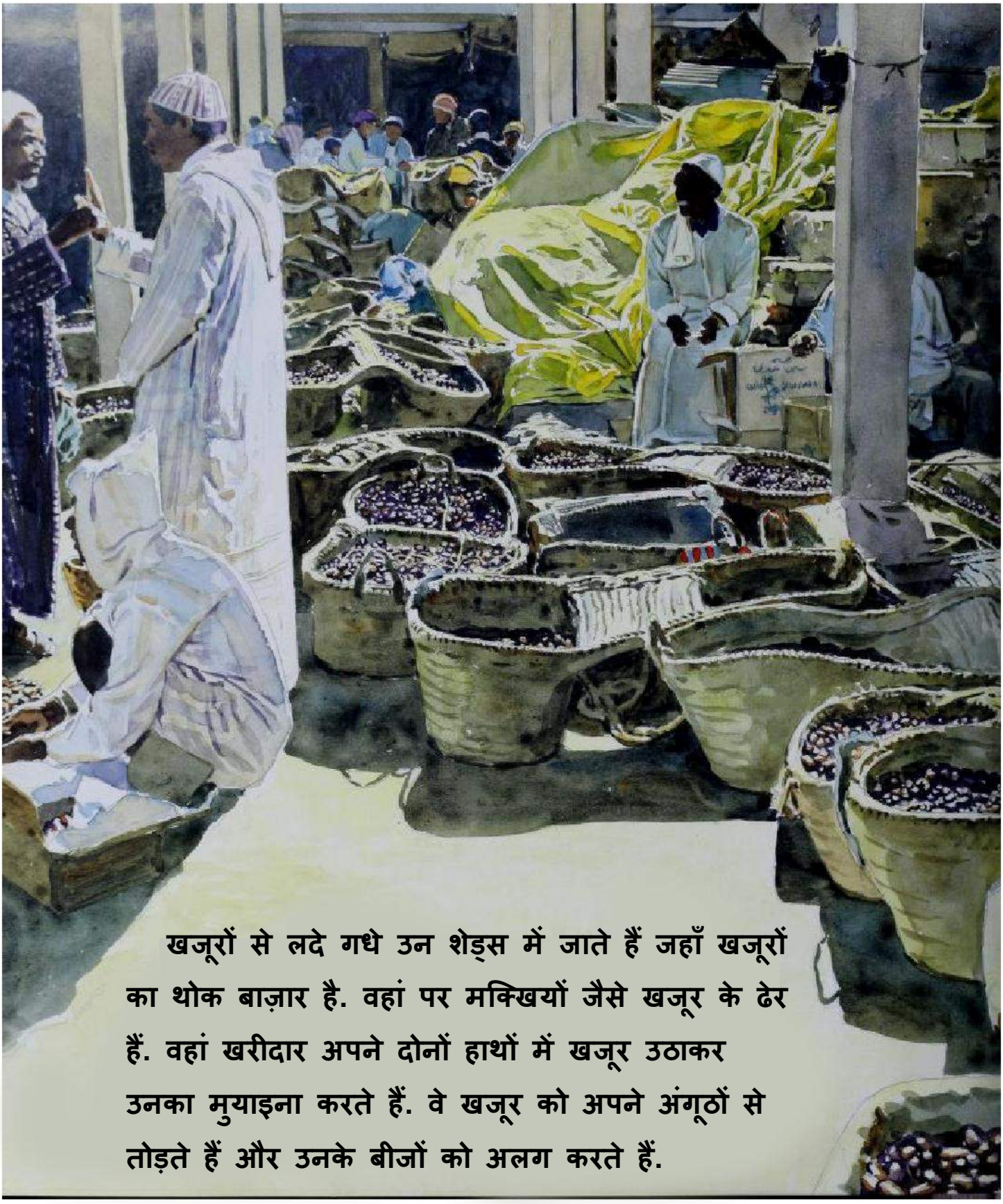

खजूरों से लदे गधे उन शेड्स में जाते हैं जहाँ खजूरों का थोक बाज़ार है. वहां पर मक्खियों जैसे खजूर के ढेर हैं. वहां खरीदार अपने दोनों हाथों में खजूर उठाकर उनका मुयाइना करते हैं. वे खजूर को अपने अंगूठों से तोड़ते हैं और उनके बीजों को अलग करते हैं.

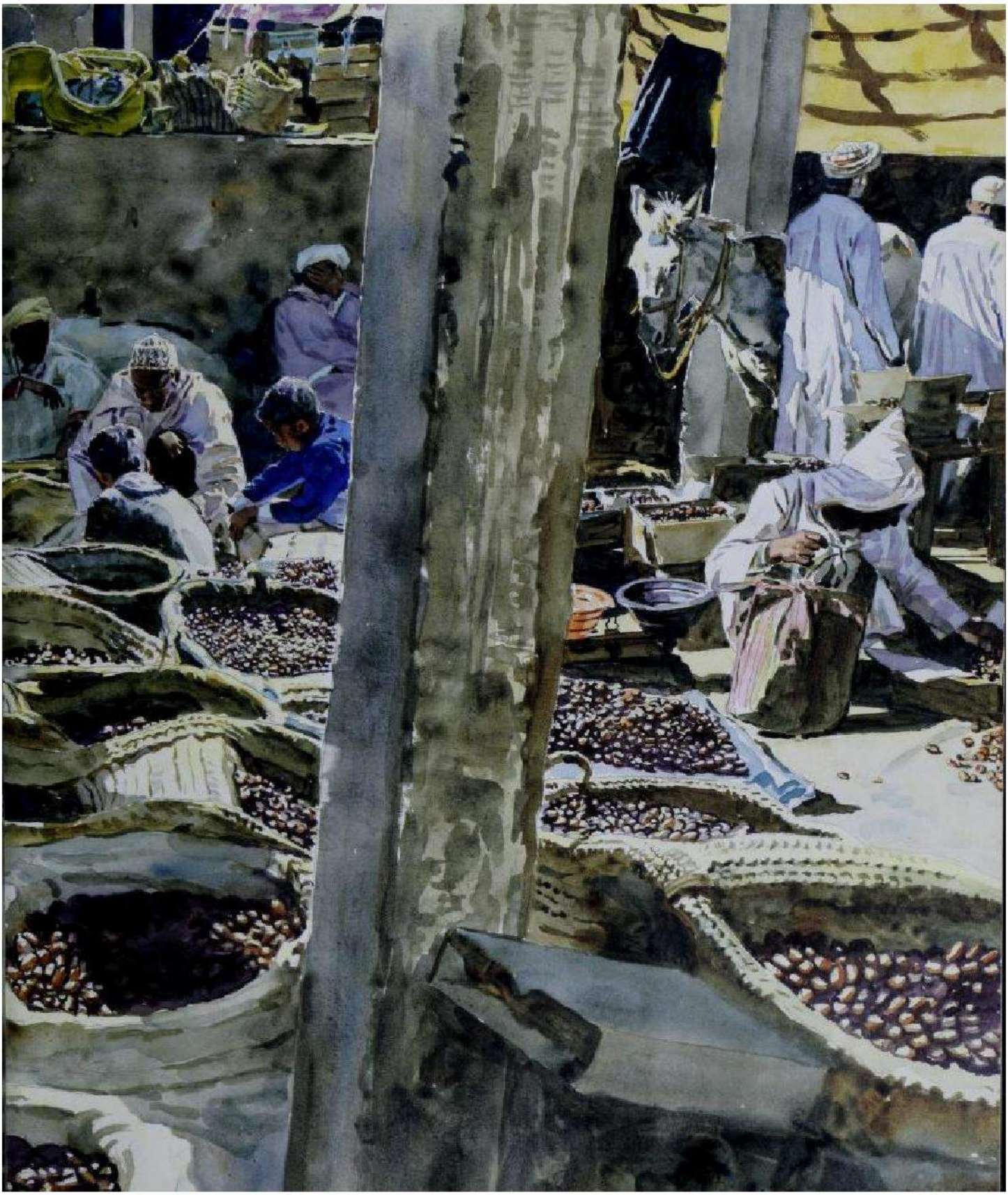

शहर से दूर, नखलिस्तान (ओएसिस) से भी दूर, सहारा रेगिस्तान में रेत के बड़े टिब्बे शुरू होते हैं. वे शाम की लाल रोशनी में दमकते हैं. कुछ टिब्बे 800-फीट ऊंचे होते हैं और वे रेत के लहरदार नमूने बनाते हैं. ऐसा लगता है कि रेत के वे टिब्बे, नखलिस्तान यानि बाज़ार को, जल्द ही हमेशा के लिए हज़म कर जायेंगे.